

प्राणों से है प्यारा मुझे कौशल्या का लाल ॥  
 रोम रोम में रमा है मेरे प्यारा राम बाल ॥  
 खिले कमल समान जांके नैन हैं विशाल  
 रोम रोम में रमा है मेरे प्यारा राम बाल ॥  
 मृत्यु लोक में हुआ जब दुष्टों का अत्याचार  
 गौ रूप धारण करके किया पृथ्वी पुकार  
 करुणा निधान स्वामी वेगि कीजिए सम्भार  
 अब न सहा जाता है इतना दुखों का भार  
 तेरे समान कोई नहीं दीनों का दयाल ॥१॥  
 सुनि दीन वचन भूमि के भई गगन से वाणी  
 हो ओ नहीं अधीर तुम धरणि निमाणी  
 रघुवंश में होगा जन्म सुनो सत्य कहानी  
 करि दुष्टों का संहार करुं कुशल कल्याणी  
 जै होगी सत्य धर्म की मिटि जाएंगे जंजाल ॥२॥  
 मधु मास की हुई जब तिथि नौमी सहाई  
 श्री राम जन्म की मिली घर घर में वाधाई

भई फूल वर्षा गगन से और जै धुनि छाई  
कीरति श्री राम जननि की सारी विश्व में गाई  
आनंद सिंधु उमड़ि पड़ा जहां तहां तत्काल ॥३॥  
सुत चार श्री अवधेश के नित आंगन में डोलें  
प्राणों में सुधा सींचते जब मां मां बोलें  
लखि बाल केल जननि रस सिंधु कलोलें  
कमल नैन मधुर बैन से सुख खानि सी खोलें  
देखि दरस अवध नारि नर हो गए निहाल ॥४॥  
चिर जीवो श्री अवधेश के सुत चार दुलारे  
गुण रूप लीला सिंधु संत प्राण प्यारे  
रहे बाजती वधाई अवधेश के द्वारे  
जै जै श्री राघव राम की सारी विश्व पुकारे  
जै जै मनाती कोकिला नितु बैठि करि रसाल ॥५॥